पाठ - अब कैसे छूटै राम

शब्दार्थ-व्याख्या

1. अब कैसे छूटै ..... करै रैदासा॥

शब्दार्थ –

- बास – गंध
- समानी – समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)
- घन – बादल
- मोरा – मोर, मयूर
- चितवत – देखना, निरखना
- चकोर – तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
- बाती – बत्ती, रुई, जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं
- जोति – ज्योति, देवता के प्रीती के लिए जलाया जाने वाला दीपक
- बरै – बढ़ाना, जलना
- राती – रात्रि
- सुहागा – सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य (तरल पदार्थ)
- दासा – दास, सेवक

व्याख्या – इस पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।

कवि भगवान से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम दीपक हो तो तुम्हारा भक्त उसकी बत्ती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं।

उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है। कवि रैदास अपने आराध्य के प्रति अपनी भक्ति को दर्शाते हुए कहते हैं कि हे मेरे प्रभु! यदि तुम स्वामी हो तो मैं आपका भक्त आपका दास यानि नौकर हूँ।

egyanarchive

2. ऐसी लाल तुझ …….. ते सभै सरै॥

शब्दार्थ

- लाल – स्वामी
- कउनु – कौन
- गरीब निवाजु – दीन-दुखियों पर दया करने वाला
- गुसईआ – स्वामी, गुसाईं
- माथै छत्रु धरै – मस्तक पर मुकुट धारण करने वाला
- छोति – छुआछूत, अस्पृश्यता
- जगत कउ लागै – संसार के लोगों को लगती है
- ता पर तुहीं ढरै – उन पर द्रवित होता है
- नीचहु ऊच करै – नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है
- नामदेव – महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत, इन्होंने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है
- तिलोचनु (त्रिलोचन) – एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, जो ज्ञानदेव और नामदेव के गुरु थे
- सधना – एक उच्च कोटि के संत जो नामदेव के समकालीन माने जाते हैं
- सैनु – ये भी एक प्रसिद्ध संत हैं, आदि 'गुरुग्रंथ साहब' में संगृहीत पद के आधार पर इन्हें रामानंद का समकालीन माना जाता है
- हरिजीउ – हरि जी से
- सभै सरै – सब कुछ संभव हो जाता है

व्याख्या – इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि हे! मेरे स्वामी तुझ बिन मेरा कौन है अर्थात कवि अपने आराध्य को ही अपना सब कुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बड़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान् की इच्छा के बिना दुनिया में कोई भी कार्य संभव नहीं है। कवि कहते हैं कि भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं अर्थात भगवान् मनुष्यों के द्वारा किए गए कर्मों को देखते हैं न कि किसी मनुष्य की जाति को। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे !सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो, उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के **उत्तर** दीजिए –

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीज़ों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

(ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे- पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

(ग) पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए –

उदाहरण :	*दीपक*	*बाती*
	.....	.....
	.....	.....
	.....	.....
	.....	.....

(घ) दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(च) 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

(छ) निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए –

मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, धरै, छोति, तुहीं, गुसइआ

egyanarchive

उत्तर-

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की तुलना निम्नलिखित चीज़ों से की गई हैं–

(1) भगवान की घन बन से, भक्त की मोर से

(2) भगवान की चंद्र से, भक्त की चकोर से

(3) भगवान की दीपक से, भक्त की बाती से

(4) भगवान की मोती से, भक्त की धागे से

(5) भगवान की सुहागे से, भक्त की सोने से

(6) भगवान की चंदन से, भक्त की पानी से

(ख)

मोरा	चकोरा
दासा	रैदासा
बाती	राती
धागा	सुहागा

(ग)

मोती	धागा
घन बन	मोर
सुहागा	सोना
चंदन	पानी
दासा	स्वामी

egyanarchive

(घ) 'गरीब निवाजु' का अर्थ है, गरीबों पर दया करने वाला। कवि ने भगवान को 'गरीब निवाजु' कहा है क्योंकि ईश्वर ही गरीबों का उद्धार करते हैं, सम्मान दिलाते हैं, सबके कष्ट हरते हैं और भवसागर से पार उतारते हैं।

(ङ) 'जाकी छोति जगत कउ लागै' का अर्थ है जिसकी छूत संसार के लोगों को लगती है और 'ता पर तुहीं ढरै' का अर्थ है उन पर तू ही (दयालु) द्रवित होता है। पूरी पंक्ति का अर्थ है गरीब और निम्नवर्ग के लोगों को समाज सम्मान नहीं देता। उनसे दूर रहता है। परन्तु ईश्वर कोई भेदभाव न करके उन पर दया करते हैं, उनकी मद्द करते हैं, उनकी पीड़ा हरते हैं।

(च) रैदास ने अपने स्वामी को गुसईया, गरीब निवाज़, गरीब निवाज़ लाला प्रभु आदि नामों से पुकारा है।

(छ)

मोरा	-	मोर
चंद	-	चन्द्रमा
बाती	-	बत्ती
बरै	-	जले
राती	-	रात
छत्रु	-	छत्र
धरै	-	रखे
छोति	-	छुआछूत
तुहीं	-	तुम्हीं
राती	-	रात
गुसइआ	-	गौसाई

egyanarchive

2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए –

(क) जाकी अँग-अँग बास समानी

(ख) जैसे चितवत चंद चकोरा

(ग) जाकी जोति बरै दिन राती

(घ) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

(ङ) नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उत्तर-

(क) कवि के अंग-अंग मे राम-नाम की सुगंध व्याप्त हो गई है। जैसे चंदन के पानी में रहने से पानी में उसकी सुगंध फैल जाती है, उसी प्रकार राम नाम के लेप की सुगन्धि उसके अंग-अंग में समा गयी है।

(ख) चकोर पक्षी अपने प्रिय चाँद को एकटक निहारता रहता है, उसी तरह कवि अपने प्रभु राम को भी एकटक निहारता रहता है। इसीलिए कवि ने अपने को चकोर कहा है।

(ग) ईश्वर दीपक के समान है जिसकी ज्योति हमेशा जलती रहती है। उसका प्रकाश सर्वत्र सभी समय रहता है।

(घ) भगवान को लाल कहा है कि भगवान ही सबका कल्याण करता है इसके अतिरिक्त कोई ऐसा नहीं है जो गरीबों को ऊपर उठाने का काम करता हो।

(ङ) कवि का कहना है कि ईश्वर हर कार्य को करने में समर्थ हैं। वे नीच को भी ऊँचा बना लेता है। उनकी कृपा से निम्न जाति में जन्म लेने के उपरांत भी उच्च जाति जैसा सम्मान मिल जाता है।

3. रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

पहले पद का केंद्रीय भाव यह है कि राम नाम की रट अब छूट नहीं सकती। रैदास ने राम नाम को अपने अंग-अंग में समा लिया है। वह उनका अनन्य भक्त बन चुका है।

दूसरे पद का केंद्रीय भाव यह है कि प्रभु दीन दयालु हैं, कृपालु हैं, सर्वसमर्थ हैं तथा निडर हैं। वे अपनी कृपा से नीच को उच्च बना सकते हैं। वे उद्धारकर्ता हैं।

egyanarchive

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1.

भक्त कवि कबीर, गुरु नानक, नामदेव और मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए।

उत्तर-

1. कबीर दास (1398–1518)

विशेषता: निर्गुण भक्ति, सहज भाषा, दोहे और साखियाँ प्रसिद्ध।

प्रमुख रचनाएँ:

- **बीजक** (मुख्य ग्रंथ)

- **कबीर के दोहे** (बहुत प्रसिद्ध)

  कुछ उदाहरण:

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥"
"माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर॥"

---

2. गुरु नानक देव जी (1469–1539)

विशेषता: एकेश्वरवाद, भाईचारा, सच्चे जीवन पर बल।

प्रमुख रचनाएँ:

- **गुरु ग्रंथ साहिब** में संकलित "जपुजी साहिब", "सिद्ध गोष्ठी" आदि।

  उदाहरण (जपुजी साहिब से):

"इक ओंकार सत नाम, करता पुरख, निर्भऊ, निरवैर।
अकाल मूरति, अजूनी, सैभं, गुर प्रसाद॥"

---

3. नामदेव (1270–1350)

विशेषता: सगुण भक्ति, विष्णु भक्ति पर केंद्रित भजन।

प्रमुख रचनाएँ:

- **नामदेव के अभंग** (मराठी में)
- **गुरु ग्रंथ साहिब** में भी नामदेव के 60 से अधिक भजन संकलित।

  उदाहरण:

"तेरे नाम का रस पीया है,
तन-मन मगन हुआ है।
राम नाम सदा जपूं,
जीवन सफल हुआ है॥"

---

4. मीराबाई (1498–1547)

विशेषता: कृष्णभक्ति, प्रेम और समर्पण की मूर्त रूप।

प्रमुख रचनाएँ:

- **मीरा के पद** (भक्ति भाव से भरे गीत)

  उदाहरण:

egyanarchive

"पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
बसि गई मेरे मन में, मेरे गुरु गोविंद रसायो॥"
"मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
हरि दरस बिन जिया नहीं लागे।"

egyanarchive